Chhewang Urgiol
Government Primary School, Khar, Post office Sagnam Lahual Spiti, Himachal Pradesh
Email id: hoteloldmonk@gmail.com

Abstracts

This is a small primary school where the school head has emphasized on teaching learning process and due to this each year few of the students from his school has been selected to Navodaya Vidyalaya. School location is in a remote area, which is not well connected to the mainstream. He had set up a good quality TV and computer room. He opened one room library where students study after lunch every day. Classrooms are properly maintained, well-ventilated and warm with regular electricity and sufficient solar light. Teaching Learning Material (TLM) corner has been created and activity room is available to the students which make teaching- learning more interesting.

राजकीय प्राथमिक पाठशाल खर

विद्यालय का नाम :	**राजकीय प्राथमिक पाठशाला , खर**		
विद्यालय कोड:	02030403101		
खंड :	**काजा**		
जिला:	**लाहौल स्पिति**		
पता:	**गाँव खर , डाक घर सगनम, जिला लाहौल स्पिति, हिमाचल प्रदेश**		
वर्तमान स्थिति:			
कुल छात्र:	1-5	**के. जी**	**कुल**
	11	2	13
कुल अध्यापक	2		

<u>टी. वी एवं कंप्यूटर रूम</u>

पाठशाला में टी.वि. एवं कंप्यूटर की सुविधाओ का प्रावधान प्रभारी अध्यापक छेवांग यूरज़ल तथा गाँव व्वासियो के आपसी सहसेहयोग से किया गया। यहाँ पर बच्चों को कंप्यूटर चलाना टीवी के माध्यम से कविता पाठ तथा कहानी इत्यादि दिखाए जाते है। कई बार समाचार आदि भी दिखाए जाते हैं।

पुस्तकालय

यह पुस्तकालय कमरा है । यहाँ रोज़ बच्चे दोपहर भोजन के बाद किताबे पढने है । पुस्तकालय में किताबों का प्रबंध भी मैंने अपने पहल से की जिसमे कुछ लोगों का योगदान रहा जो इस प्रकार से हैं:

1. **जो मेम**
2. **लेट्स बुक नमक एन. सी. जी . ओ**

कक्षा कक्ष

कक्षा कक्ष पूरी तरह रंग रोगन चित्र के द्वारा बेहतरीन तरीके से सजाया गया है। सफाई का पूरा प्रबंध किया गया है ।कमरा हवादार एवं गरम है । कमरे में प्रकाश हेतु बिजली व् सोलर लाइट इत्यादि की व्यवस्था है ।

टी एल एम् कार्नर एवं गतिविधि कक्ष

बच्चों को पढाई के प्रति प्रोत्साहन करने के लिए व् शिक्षण को रुचिकर बनाने के लिए बहुत सारे शिक्षण अधिगम सामग्री व् बच्चों के मनोरंजन के लिए खिलोनें, कैरम बोर्ड आदि की व्यवस्था है।

खेल का मैदान

जब मैं इस पाठशाला में 2006 में मेरी नियिक्ति ही उस समाई पाठशाला भवन की हातात बहुत ।ख़राब पाठला के चों ओर की जमीन उबड़ खाबड़ थी परन्तु मैंने अपने पहल व् लोगों के सहोग से चों तरफ की जमीन को अम्तल कराया और न केवल सुन्दर विद्यालय वातावरण बनाया। जहाँ बच्चे सुबह श्याम विभिन्न खेल गतिविधियो में भाग लेते हैं।

शौचालय व् पानी की व्यवस्था

पाठशाला में सर्दियों व् गर्मियों के लिए अलग अलग शौचालय की व्यस्था है । पानी भी गर्मियों में सुचारू रूप से चलता है जबकि सर्दियों में नल के जन जाने के कारन पानी बंद हो जाया है । पानी की सुचारू व्यवस्था होने के कारण बच्चे नहानाधोना आदि कर सकते हैं । भविष्य मं पाठशाला के लये एक ग्रीन हाउस लगाने की योजना है ताकि बच्चों को स्वादिष्ट मध्याहन भोजन मिल सके ।

रसोईघर

पाठशाला के लिए मध्याहन भोजन पकाने के लिए एक पक्का रसोई घर है । रसोई घर में पर्याप्त मात्रा में बर्तन रैक एवं सिंक की व्यवस्था है ।

जवाहर नवोदय विद्यालय में चयनित विद्यार्थियो की सूची:

वर्ष	**विद्यार्थियों की संख्या**
2009-10	04
2010-11	02
2011-12	01
2013-14	02
2014-15	01
2015-16	01
2016-17	01
2017-18	02

इस पाठशाला से हर वर्ष कुछ न कुछ विद्यार्थियों का जवाहर नवोदय में चयन हुआ है। मेरे अपने अनुभव के आधार पर मैं यह कह सकता हूँ कि इस चयन का प्रमुख कारण बच्चों का गणित मैं अच्छी पकड़ होना है।

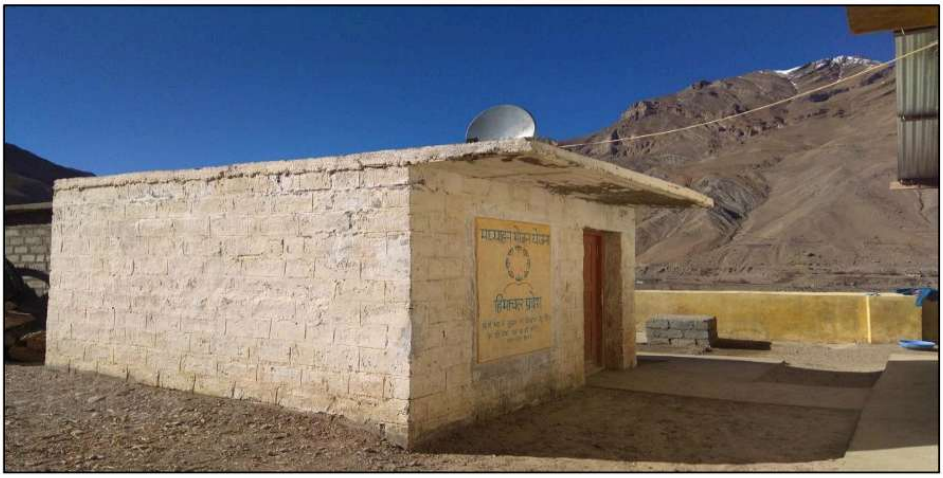

अध्यापक परिचय

नाम : छेवांग यूरज़ाल

पदनाम : कनिष्ट बुनियादी अध्यापक

गाँव: खर

जिल्ला: लाहौल स्पिति

राज्य: हिमाचल प्रदेश

प्रथम पद ग्रहण अवध: 26-11-2006

संक्षिप्त जीवनी

मेरा जन्म हिमाचल प्रदेश राज्य के जनजातीय जिला लाहौल स्पिति के छोटे से गाँव खर एमिन एक किसान परिवार में हुआ। मैंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा अपने गाँव से शुरू की। माता –पिता के गुजर जाने के बाद दसवीं के बाद मैंने अपनी पढाई छोड़ दी। जीवन में कभी अध्यापक बन पोगा यह कभी सोचा नहीं था क्योकि मेरी शिक्षा निम्न स्तर की हुई। मैंने रत-रत कर के ही अपनी शिक्षा पूरी की। शिक्षक बनाने के बाद मेरे सामने सबसे बड़ी समस्या बच्चों को पढ़ने की थी। मुझे शुरू मं बच्चों को पढ़ने में बहुत दिक्कतों का सामना करना पड़ा परन्तु लगातार प्रयास के दारा बच्चों को सिखाते –

सिखाते व् खुद सीखते –सीखते आज इस मुकाम तक पंहुचा हूँ। मेरे सिखाने के मार्ग में जीवन में घटित तीन घटनाओ का मैं उल्लेख करना चाहता हूँ:

1. मेरे चाचा छोंजोर की बह संत जिसकी वजह से में पहली बार पाठ्यपुस्तक के रट्टा मार दुनिया से बहार निकल कर बाहरी ज्ञान के बारे में सोचारे के लिए प्रेरित हुआ ।
2. शिमला में निदेशक परम्भिक शिक्षा हिमाचल श्री पि एल नेगी द्वारा ट्रेनिंग के दौरान मुझे बोलने के लिया खड़ा करना जब में पहली बार एक शिक्षक के तौर पर बोलने के लिए खड़ा हुआ थे इससे मेरे मनोबल को बहुत बल ।मिलायह घटना प्रशिक्षण के दौरान मुझसे पूछे गए एक गणित के प्रशन से जुडा है जिसमे मुझे गणित को हल करने में बहुत सहती मिली। प्रशन इस प्रकार से था : यही 840 रुपये किसी राशी का 70 % ही तो मूल धन राशी क्या होगी ? यद्यपि उस समय मैं उस प्रशन का उत्तर नहीं दे पाया पर घर जाकर सोच रहा था अचानक मेरे मन में एक नया विचार आया। यदि 2 रुपये किसी राशि का 50% हो तो मूल राशि तो चार रुपये ही होगी। इस तरह मेरे प्राश्नों का उत्तर मिल गया। बस मुझे एक सूत्र बनाना था मुझे 2 रुपये और 50% रुपये का कुछ ऐसा करना था कि उत्तर चार आ जाये। इस प्रकार 2 और 50% के भाग से मुझे उत्तर की प्राप्ति हुई ।इसको मुझे गणित को हल करने में बहुत आसानी हुई। गणित को हल करने से पहले में हमेशा यही सोचता था कि उस प्रश्न से जुदा कोई पूर्व ज्ञान तो नहीं है। जिससे की उस प्रश्न को हल किया जा सके।

<u>मेरी सफलता का प्रमुख कारक</u>

मेरी सफलता का राज़ कोई एक कारण नहीं है इससे बहुत सरे ऐसे बिंदु है जो मेरी सफलता का कारण है। मैंने निम्नलिखित बिन्दुओ को आधार बना कर अपने शिक्षण गतिविधि को आगे बढाया जो इस प्रकार से है :

1. सतत प्रयास
2. कौशल विकास
3. व्यावहारिक शिक्षा
4. पाठ्यपुस्तक सम्पूर्ण नहीं साधन मात्र
5. शिक्षण अधिगम सामग्री का अधिकतम प्रयोग
6. बुनियादी सुविधाओं की व्यवस्था में समाज का सहयोग
7. मेरा अनुभव मेरी विधि
8. सिखाना आसान है अगर शिक्षण अच्छा हो